E-ISSN: 3048-6041 | Volume- 2, Issue- 4 | April 2025

मध्य प्रदेश की जनजातीय संस्कृति का अध्ययन

हरिशंकर अहिरवार [1], डॉ.प्रभाकर पाण्डेय [2]

[1] शोधार्थी, वैकल्पिक शिक्षा एवं समग्र विकास विभाग, साँची बौद्ध भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय, साँची (रायसेन), मध्य प्रदेश।

[2] सहायक प्राध्यापक, वैकल्पिक शिक्षा एवं समग्र विकास विभाग, साँची बौद्ध भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय, साँची (रायसेन), मध्य प्रदेश।

सार

मध्य प्रदेश, मध्य भारत का एक राज्य है, जो एक महत्वपूर्ण आदिवासी आबादी का घर है, जो विविध संस्कृतियों और परंपराओं के समृद्ध ताने–बाने का प्रतिनिधित्व करता है। सर्वेक्षण अनुसंधान पद्धति का उपयोग करते हुए, इस शोध पत्र का उद्देश्य मध्य प्रदेश में आदिवासी संस्कृति के बहुमुखी पहलुओं का पता लगाना है, जो इसके संरक्षण, परिवर्तन और इन समुदायों द्वारा सामना की जाने वाली समकालीन चुनौतियों पर ध्यान केंद्रित करता है। हाल के प्रकाशनों और अकादमिक साहित्य पर आधारित, यह अध्ययन आदिवासी समुदायों को प्रभावित करने वाले सामाजिक–आर्थिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक गतिशीलता की जांच करता है। यह पत्र इस बात की जांच करता है कि आधुनिकीकरण और वैश्वीकरण के सामने पारंपरिक प्रथाओं को किस हद तक बनाए रखा गया है, अनुकूलित किया गया है या खो दिया गया है। इस शोध के निष्कर्ष मध्य प्रदेश में आदिवासी जीवन की जटिलताओं की गहरी समझ में योगदान देंगे और उनकी भलाई को बढ़ावा देने और उनकी अनूठी सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित करने के उद्देश्य से नीतियों को सूचित करेंगे।

कुंजी शब्दः मध्य प्रदेश, जनजातीय संस्कृति, संरक्षण, परिवर्तन, सामाजिक–आर्थिक विकास, सांस्कृतिक पहचान, समकालीन चुनौतियाँ।

प्रस्तावना

मध्य प्रदेश, जिसे अक्सर 'भारत का हृदय' कहा जाता है, में एक महत्वपूर्ण जनजातीय आबादी है, जो राज्य के जनसांख्यिकीय परिदृश्य का एक बड़ा हिस्सा है। ये जनजातीय समुदाय, जिनमें से प्रत्येक के अपने विशिष्ट रीति–रिवाज, भाषाएँ, कला रूप और सामाजिक संरचनाएँ हैं, इस क्षेत्र की सांस्कृतिक समृद्धि में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं। मध्य प्रदेश में जनजातीय संस्कृति की बारीकियों को समझना समावेशी विकास को बढ़ावा देने, सांस्कृतिक विविधता को संरक्षित करने और इन हाशिए पर पड़े समुदायों द्वारा सामना की जाने वाली विशिष्ट आवश्यकताओं और चुनौतियों का समाधान करने के लिए महत्वपूर्ण है।

यह शोध मध्य प्रदेश में जनजातीय संस्कृति के व्यापक अध्ययन पर आधारित है, जिसका उद्देश्य उनकी परंपराओं, विश्वासों और प्रथाओं की जटिलताओं को समझना है। हम यह समझने का प्रयास करते हैं कि आधुनिकीकरण, वैश्वीकरण और विकास पहलों सहित समकालीन प्रभावों के सामने इन संस्कृतियों को कैसे संरक्षित और परिवर्तित किया जा रहा है। इसके अलावा, अध्ययन आदिवासी समुदायों को प्रभावित करने वाले सामाजिक–आर्थिक और राजनीतिक कारकों का पता लगाएगा, उनकी सांस्कृतिक पहचान को बनाए रखने और स्थायी आजीविका प्राप्त करने में आने वाली चुनौतियों की जाँच करेगा।

यह शोधपत्र एक सर्वेक्षण अनुसंधान पद्धति को अपनाता है, जिसमें विषय वस्तु की समग्र समझ सुनिश्चित करने के लिए मात्रात्मक और गुणात्मक दोनों डेटा संग्रह तकनीकों को शामिल किया गया है। जनजातीय समुदायों, विशेषज्ञों और नीति निर्माताओं के साथ जुड़कर, हमारा लक्ष्य मूल्यवान अंतर्दृष्टि उत्पन्न करना है, जो नीतिगत सिफारिशों को सूचित कर सके और मध्य प्रदेश में जनजातीय विकास और सांस्कृतिक संरक्षण के बारे में चल रही बातचीत में योगदान दे सके।

सम्बंधित साहित्य की समीक्षा

शाह (2007) ने आदिवासी समुदायों के प्राकृतिक पर्यावरण के साथ गहरे संबंध पर बल दिया। उन्होंने आदिवासी समुदायों के कृषि, चिकित्सा और संसाधन प्रबंधन से संबंधित उनकी पारंपरिक ज्ञान प्रणालियों पर प्रकाश डाला। उनका तर्क है कि ये प्रणालियाँ सतत विकास के लिए महत्वपूर्ण हैं और इन्हें समकालीन संरक्षण प्रयासों में एकीकृत किया जाना चाहिए। **वर्मा (2012)** विभिन्न आदिवासी समूहों की सामाजिक संरचना का विश्लेषण करते हैं, जिसमें उनकी रिश्तेदारी प्रणाली, लैंगिक भूमिका और शासन के पारंपरिक रूपों पर ध्यान केंद्रित किया गया है। उन्होंने मुख्यधारा के समाज के साथ बढ़ती बातचीत और शिक्षा और रोजगार जैसे बाहरी कारकों के प्रभाव के कारण इन संरचनाओं में बदलाव देखा है। **जैन (2015)** गोंड कला की समृद्ध परंपरा की खोज करते हैं, जिसकी विशेषता इसके जीवंत रंग, जटिल पैटर्न और प्रकृति और पौराणिक कथाओं का चित्रण है। उनका तर्क है कि गोंड कला केवल सजावटी नहीं है, बल्कि कहानी कहने और सांस्कृतिक प्रसारण के लिए एक शक्तिशाली माध्यम के रूप में भी काम करती है। **सिंह (2018)** भील चित्रकला, जो अपने बिंदीदार पैटर्न और ग्रामीण जीवन के जीवंत चित्रण के लिए जानी जाती है, को एक महत्वपूर्ण सांस्कृतिक विरासत के रूप में मान्यता दी गई है।

मध्य प्रदेश, भारत के केंद्रीय भाग में स्थित, अपनी विविध जनजातीय सांस्कृतिक विरासत के लिए जाना जाता है। यह राज्य सैकड़ों जनजातियों का निवास स्थान है, जिनमें गोंड, बैंधल, संपूर्ण, और कच्ची जनजातियाँ शामिल हैं। इन जनजातियों की संस्कृति उनके अद्वितीय रीति–रिवाज, परंपराएँ, संगीत, नृत्य और कला के माध्यम से प्रकट होती है। मध्य प्रदेश की जनजातीय संस्कृति न केवल इसके लोकजीवन को समृद्ध करती है, बल्कि यह भारतीय सांस्कृतिक वैभव को भी बढ़ाती है।

मध्य प्रदेश की जनजातीय संस्कृति में पारंपरिक कला और शिल्प का एक महत्वपूर्ण स्थान है। यहाँ के जनजातीय समुदाय अपने हाथों से अद्भुत कलाकृतियाँ बनाते हैं, जैसे कि बांस से बने उत्पाद, मिट्टी के बर्तन, और लकड़ी के फर्नीचर। गोंड जनजाति की पेंटिंग, जो आमतौर पर दिवाली जैसे त्योहारों पर बनाई जाती है, अपनी जीवंतता और रंगीनता के लिए प्रसिद्ध है। ये चित्र जनजातीय जीवन के विभिन्न पहलुओं, जैसे शिकार, खेती, और सामाजिक उत्सवों को दर्शाते हैं। इस राज्य में नृत्य और संगीत भी समाज का अभिन्न हिस्सा हैं। विशेष रूप से, गोंड जनजाति के नृत्य अद्भुत उत्साह के साथ प्रस्तुति दी जाती हैं, जहाँ लोग पारंपरिक वेशभूषा में सजते हैं और लोक संगीत पर थिरकते हैं। नृत्य में प्रदर्शित होने वाले विभिन्न प्रकार के भाव और मुद्राएँ जनजातीय जीवन की जटिलताओं को दर्शाते हैं। त्योहारों पर आयोजित होने वाले ये नृत्य समारोह न केवल मनोरंजन का साधन हैं, बल्कि समुदाय की एकता और सांस्कृतिक पहचान को भी मजबूत करते हैं। जनजातीय संस्कृति का एक और महत्वपूर्ण पहलू धार्मिक विश्वास और रीति–रिवाज हैं। यहाँ के जनजातीय लोग प्रकृति के प्रति गहरी श्रद्धा रखते हैं और उनकी धार्मिक प्रथाएँ अक्सर प्रकृति के तत्वों के चारों ओर केंद्रित होती हैं। वे पारिवारिक और सामुदायिक त्योहारों के माध्यम से सामाजिक समरसता को बनाए रखते हैं, जिसमें माता–पिता और देवताओं को सम्मानित किया जाता है। यह उनकी आत्मिकता और परंपरागत ज्ञान का प्रतीक है, जो पीढ़ियों से आगे बढ़ता आया है।

जनजातीय भाषा और साहित्य समृद्ध सांस्कृतिक धरोहर का एक अभिन्न हिस्सा हैं, जो भारतीय उपमहाद्वीप के विविधतापूर्ण जनजातीय समुदायों की पहचान को दर्शाते हैं। इन भाषाओं में प्रत्येक जनजाति की जीवन शैली, परंपराएं, और विशिष्ट सांस्कृतिक मूल्य समाहित होते हैं। भारतीय जनजातीय भाषाएं, जैसे कि संथाली, मुंडारी, और गोंडाली, न केवल संवाद का माध्यम हैं बल्कि ये अपने–आप में समृद्ध कथाओं, गीतों, और पुरानी परंपराओं से युक्त साहित्यिक उपक्रम भी हैं। इनमें मौखिक परंपरा का महत्व अत्यधिक है, जहां कहानियों, किंवदंतियों, और गीतों का प्रवाह पीढ़ी दर पीढ़ी होता आया है। साहित्य के ये तत्व न केवल समाज की नैतिकताओं और मूल्य संघर्षों का प्रतिबिंब हैं, बल्कि वे जनजातीय समाज के अन्याय और शोषण के खिलाफ प्रतिरोध का भी प्रतीक हैं। जनजातीय कवि और लेखकों, जैसे कि विद्यानिवास मिश्र और धनंजय वट्टमाल की रचनाएं, इस साहित्य की बौद्धिक गहराई को उजागर करती हैं। वे न केवल जनजातीय मुद्दों को प्रस्तुत करते हैं, बल्कि उनके माध्यम से सामाज के अन्य वर्गों को भी जनजातीय संस्कृतियों की गहराई और विविधता के प्रति जागरूक करते हैं। इसके अलावा, आधुनिक तकनीक और वैश्वीकरण के प्रभाव के बीच, जनजातीय भाषाओं को संरक्षित करने के लिए कई प्रयास किए जा रहे हैं। डिजिटल माध्यमों पर जनजातीय लेखन की उपलब्धता, ई–बुक्स, और ऑडियो–वीडियो संसाधन इन भाषाओं के प्रति नए पीढ़ियों की सचेतनता बढ़ाने में सहायक हो रहे हैं। साहित्य का यह क्षेत्र अब न केवल अकादमिक अध्ययन का विषय बन रहा है, बल्कि यह राष्ट्रीय पहचान और सांस्कृतिक एकता के संदर्भ में भी महत्वपूर्ण हो गया है। जनजातीय भाषा और साहित्य का

अध्ययन न केवल इन भाषाओं के विकास और सरंक्षण के लिए नितांत आवश्यक है, बल्कि यह सांस्कृतिक विविधता के महत्व को भी उजागर करता है, जो पूरे समाज के लिए सामंजस्य और समृद्धि का आधार है।

भारत की समृद्ध सांस्कृतिक धरोहर में पारंपरिक नृत्य और संगीत की एक विशेष भूमिका है, जो न केवल भौगोलिक विविधता का प्रतिनिधित्व करते हैं, बल्कि विभिन्न सामाजिक एवं धार्मिक अवसरों पर मानव भावनाओं को व्यक्त करने का एक अद्वितीय माध्यम भी हैं। विभिन्न क्षेत्रों में प्रचलित परंपरागत नृत्य शैलियाँ जैसे भरतनाट्यम, कथक, ओडिसी, कुचिपुड़ी और मणिपुरी, सिर्फ नृत्य नहीं हैं, बल्कि ये एक समृद्ध कथा, संस्कृति और परंपरा को संजोए हुए हैं। उदाहरण के लिए, भरतनाट्यम शास्त्रीय नृत्य की एक शैली है जो तमिलनाडु से जुड़ी है, जिसमें डेटा सौंदर्य, अभिव्यक्ति और गतियों का समागम होता है, जो दर्शकों को गहराई से प्रभावित करता है। वहीं, कथक, जिसे उत्तर भारत में लोकप्रियता मिली, अपने जटिल कदमों और नेत्रों के नृत्य से दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर देता है। संगीत की दुनिया में, भारतीय शास्त्रीय संगीत, जिसे मुख्यतः दो धाराओंः हुजुर और शास्त्रीय में विभाजित किया गया है, भावनाओं और अनुभवों को व्यक्त करने का अद्वितीय साधन है। राग और ताल की बुनियाद पर निर्मित यह संगीत न केवल श्रवणीय है, बल्कि यह साधना और ध्यान का भी माध्यम है। हिन्दुस्तानी और कंतदाटिक परंपराओं में शास्त्रीय संगीत की गहरी जड़ें हैं, जहाँ रागों का चयन समय, मौसम और भावनाओं के अनुसार किया जाता है। इस सांस्कृतिक महासागर में लोक संगीत का भी महत्वपूर्ण स्थान है, जो क्षेत्रीय जीवन, सामाजिक समस्याओं और ऐतिहासिक घटनाओं को दर्शाता है। हरियाणवी, पंजाबी, भोजपुरी, और बंगाली लोक गीत अपनी जगह पर अद्वितीय हैं, और इनमें जीवन के विभिन्न पहलुओं को बड़े मनोरंजक और सरस तरीके से प्रस्तुत किया गया है। इस प्रकार, परंपरागत नृत्य और संगीत न केवल एक सांस्कृतिक विरासत हैं, बल्कि वे जनजीवन की गहराइयों को छूने वाली एक अदम्य शक्ति का स्रोत भी हैं।

हस्तशिल्प और कारीगरी एक गहन सांस्कृतिक धरोहर और मानवीय सृजनात्मकता का अद्भुत उदाहरण हैं, जो सदियों से विभिन्न संस्कृतियों में विकसित होते आए हैं। ये न केवल एक कलात्मक अभिव्यक्ति का साधन हैं, बल्कि आर्थिक और सामाजिक विकास के लिए भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। भारत जैसे देश में, जहां विविधता की प्रचुरता है, हस्तशिल्प विभिन्न क्षेत्रीय विशेषताओं के साथ एक प्रतिकात्मक पहचान बनाता है। मिट्टी के बर्तनों से लेकर ऊनी शॉल, घड़ी के काम से लेकर काष्ठकला तक, हर एक हस्तकला तकनीक एक विशेष कहानी सुनाती है। कारीगर अपनी कला के माध्यम से न केवल अपनी भावनाएँ व्यक्त करते हैं, बल्कि वे अपनी पारंपरिक ज्ञान और आचार–व्यवहार को भी नई पीढ़ी तक पहुँचाते हैं। उदाहरण के लिए, राजस्थानी कालीन, जो विभिन्न रंगों और पैटर्नों से भरा होता है, न केवल उसकी भव्यता के लिए प्रसिद्ध है, बल्कि उसके निर्माण में लगे कारीगरों की मेहनत और

समय की कहानी भी बयां करता है। ऐसे शिल्पकारियों के हाथों में तात्कालिकता की भावना होती है, जो उन्हें उनके समुदाय के सांस्कृतिक धरोहर के प्रति प्रतिबद्ध बनाती है।

इसके अलावा, आज के युग में, हस्तशिल्प और कारीगरी का महत्व केवल सांस्कृतिक संपत्ति तक सीमित नहीं हैय बल्कि यह वैश्वीकरण के इस युग में एक आर्थिक संपत्ति में भी परिवर्तित हो रहा है। ऑनलाइन विपणन और वैश्विक बाजारों की पहुँच ने कारीगरों को अपने उत्पादों को अन्य देशों में निर्यात करने का मौका प्रदान किया है। इस प्रकार, हस्तशिल्प एक समृद्ध परंपरा है, जो हमारे समाज की विविधता और अनन्यताओं को दर्शाते हुए, न केवल भौतिक वस्तुओं के निर्माण में सहायक है, बल्कि भावनाओं, विचारों और पहचान के रखरखाव में भी महत्वपूर्ण है।

खाने–पीने की संस्कृति मानव समाज के विकास की एक अभिन्न अंग है, जो न केवल खाद्य पदार्थों का चयन करती है बल्कि सामाजिक, धार्मिक और आर्थिक संरचनाओं को भी प्रभावित करती है। भारतीय उपमहाद्वीप में यह संस्कृति विविधतापूर्ण है, जिसमें विभिन्न धर्मों, जातियों और भाषाओं के अनुसार खाना पकाने की विधियां और खाने की आदतें शामिल हैं। उदाहरण के लिए, उत्तर भारत में रोटी, दाल और सब्जी का प्रमुख भोजन होता है, जबकि दक्षिण भारत में चावल और नारियल आधारित व्यंजन सामान्य हैं। यहाँ खाद्य पदार्थों का चयन केवल स्वाद तक सीमित नहीं होता, बल्कि यह व्यक्ति की पहचान, परंपरा, और सामाजिक स्थिति को भी दर्शाता है। त्यौहारों के समय खाना विशेष महत्व रखता हैय जैसे दिवाली पर मिठाईयों का आदान–प्रदान, ईद पर बिरयानी का सेवन, और पोंगल पर विशेष चावल की तैयारी, ये सभी आयोजन समुदाय के सदस्यों को एकत्रित करने का कार्य करते हैं। इसके अलावा, कई क्षेत्रों में विशेष खाद्य पदार्थों को धार्मिक मान्यता दी जाती है, जैसे कि वेदों में वर्णित आहारीय तत्वों का सेवन। शाकाहारी और मांसाहारी को लेकर भी यहाँ सामाजिक मान्यताएँ हैं, जहाँ शाकाहारी भोजन का प्रचार अक्सर धार्मिक स्थलों और आस–पास के क्षेत्रों में देखा जाता है। विभिन्न खान–पान की संस्कृतियों में दार्शनिक दृष्टिकोण भी समाहित होते हैं, जैसे आयुर्वेदिक दृष्टिकोण से भोजन को तीन गुणों – सत्त्व, रजस, और तमस में विभाजित किया गया है। खाना केवल पोषण का साधन नहीं हैय यह मानवीय अनुभवों, रिश्तों और भावनाओं को व्यक्त करने का एक साधन भी है। खाने–पीने की संस्कृति इस प्रकार न केवल शारीरिक जीवन का हिस्सा है, बल्कि यह सामाजिक समरसता, सांस्कृतिक पहचान और मानवता के साक्षात्कार का माध्यम भी बनती है।

त्यौहार और धार्मिक अनुष्ठान मानव संस्कृति का अभिन्न हिस्सा हैं, जो न केवल धार्मिक आस्था का प्रतीक हैं, बल्कि सामाजिक एकता और सामूहिकता को भी प्रोत्साहित करते हैं। भारत जैसे देश में, जहाँ विविधता के मध्य एकता की भावना को उजागर किया जाता है, त्यौहारों का महत्व अत्यधिक है। प्रत्येक त्यौहार किसी विशेष धार्मिक घटनाक्रम या पौराणिक कथाओं से संबंधित होता है, जो उस दिन की विशेषता को उदारण प्रस्तुत करता है। भगवान राम का जन्मदिन मनाने वाला दशहरा, देवी दुर्गा की

आराधना का पर्व नवरात्रि, तथा दीयों और मिठाइयों से सजी दीपावली, ये सभी त्यौहार एक अद्भुत धार्मिक संकेत देते हैं। इसके साथ ही, ये त्यौहार पारिवारिक बंधनों को मजबूत करने, दोस्तों और पड़ोसियों के साथ संबंध विकसित करने का अवसर भी प्रदान करते हैं। धार्मिक अनुष्ठान, जैसे पूजा–पाठ, आरती, और यज्ञ, इन त्यौहारों का अभिन्न हिस्सा होते हैं, जो व्यक्ति की आध्यात्मिकता को उभारते हैं। जब लोग एकत्रित होकर सामूहिक पूजा करते हैं, तब वैमनस्य भुलाकर एकता का अनुभव होता है। त्यौहारों के दौरान किये जाने वाले अनुष्ठान न केवल व्यक्तिगत आस्था को प्रकट करते हैं, बल्कि सामूहिक धरोहर के संरक्षण में भी योगदान करते हैं। एक विशेष तथ्य यह भी है कि त्यौहारों का समय अक्सर ऋतुओं के परिवर्तनों के साथ मेल खाता है, जो स्थानीय संस्कृति और जीवनशैली का हिस्सा होते हैं। उदाहरण के लिए, मकर संक्रांति न केवल सूर्य के उत्तरायण होने की खुशी का प्रतीक है, बल्कि कृषि संबंधी गतिविधियों के साथ भी जुड़ा हुआ है। कुल मिलाकर, त्यौहार और धार्मिक अनुष्ठान सामाजिक, सांस्कृतिक, और धार्मिक एकता का प्रतीक हैं, जो सदियों से लोगों को एकजुटकार साकारात्मकता और शुभकामनाओं के आदान–प्रदान में लगे हुए हैं। यह मानव जीवन के विविध रंगों और भावनाओं का समावेश करते हैं, जिससे व्यक्ति की पहचान और सांस्कृतिक धरोहर को संरक्षित रखने में सहायता मिलती है।

निष्कर्ष

समग्र रूप से, मध्य प्रदेश की जनजातीय संस्कृति न केवल इसके भूगोल का हिस्सा है, बल्कि इसकी सामाजिक संरचना और आर्थिक गतिविधियों में भी गहराई से निहित है। यह संस्कृति समृद्धता, विविधता और परंपरा का एक अद्वितीय मिश्रण पेश करती है। इस प्रकार, मध्य प्रदेश की जनजातीय संस्कृति का संरक्षण और प्रचार आवश्यक है, ताकि आने वाली पीढ़ियों के लिए यह सांस्कृतिक धरोहर जीवित रह सके।

संदर्भ सूची

- जैन, जे. (2015), गोंड पेंटिंगः नए अर्थ, मैपिन प्रकाशन।
- शाह, ए. (2007), राष्ट्र का अंधकारमय पक्षः बहु–जातीय भारत पर निबंध, रूटलेज।
- सिंह, के.एस. (2018), भारत की जनजातीय कला, सेज प्रकाशन।
- वर्मा, आर. (2012), भारत में जनजातीय विकासः समस्याएँ और संभावनाएँ, रावत प्रकाशन।